Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

अठारहवें सप्रु हाउस व्याख्यान

में

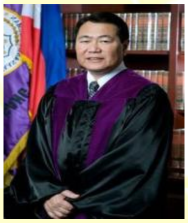

जस्टिस एंटोनियो टी कारपियो

वरिष्ठ एसोसिएट जस्टिस, फिलीपिंस उच्चतम न्यायालय

द्वारा

भाषण

सप्रु हाउस, नई दिल्ली
6 अगस्त, 2015

दक्षिण चीन सागर/ पश्चिमी फिलीपिंस सागर विवाद

(इस प्रस्तुतीकरण में प्रकट विचार लेखक के निजी विचार हैं और यह फिलीपिंस सरकार के विचार को प्रस्तुत नहीं करता है।)

देवियों और सज्जनों,

विवाद की जटिलताएं

विश्व में समुद्र के रास्ते होने वाला आधा व्यापार दक्षिण चीन सागर के रास्ते होता है जिसका कुल वार्षिक मूल्य 5.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। दक्षिण चीन सागर विवाद में समुद्री कानून संबंधी संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (यूएनसीएलओएस) * जो हमारे ग्रह के महासागरों और सागरों का संविधान है, को उलट देने की क्षमता है।

फिलीपिंस के लिए दांव यह है कि इसके ईईजेड का 80 प्रतिशत भाग दक्षिण चीन सागर में है- जिसे या तो फिलीपिंस रखता अथवा अथवा चीन के हाथों चला जाता है। दक्षिण चीन सागर के विवाद का मुख्य कारण चीन का 9-डैश वाला लाइन दावा है जो फिलीपिंस , वियतनाम, मलेशिया, ब्रुनेई और इंडोनेशिया के विशेष आर्थिक जोनों (ईईजेड) की बड़ी चौड़ी पट्टी को निगल जाता है।

*एक सौ छियासठ देश , और साथ ही यूरोपीय संघयूएनसीएलओएस के सदस्य देश हैं। यूएनसीएलओएस के सदस्य देश संयुक्त राष्ट्र के कुल 193 सदस्य राष्ट्र का 86 प्रतिशत है।

चीन का 2009 का *नोट वर्बले* जिसमें 9-डैश्ड लाइन मानचित को बताया गया है।

चीन द्वारा 7 मई, 2009 में संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंपे गए 9-डैश्ड् लाइन मानचित्र में इन डैशों के कानूनी आधार के बारे में नहीं बताया गया। इन डैशों में कोई निर्धारित समन्वय नहीं था।

“चीन का इस दक्षिण चीन सागर और आस-पास के जलीय क्षेत्रों में स्थित द्वीपों पर अविवादित संप्रभुता है और संगत जलीय क्षेत्रों व समुद्री भाग एवं तत्संबंधी भूभाग पर संप्रभु अधिकार एवं क्षेत्राधिकार है।”–**चीनी नोट वर्बले।** ”आसपास” और “संगत” जलीय क्षेत्र शब्द यूएनसीएलओएस के शब्द नहीं हैं। चीन ने “आसपास” अथवा “संगत जलीय क्षेत्रों” के अर्थ की व्याख्या नहीं की है।

वर्ष 1995 में चीन ने मिसचीफ रीफ, फिलीपिंस के ईईजेड के भीतर कम लहर उत्कर्ष वाला रीफ पर कब्जा कर लिया ; 1995 से वर्तमान समय में चीनी तटरक्षक जहाजों ने फिलीपिंस और वियतनामी मछली पकड़ने वाली नौकाओं का 9-डैश्ड लाइन के भीतर उत्पीड़न किया है।

1999 से अब तक चीन ने पारासेल , मेकलेसफिल्ड तट और स्कारबोरो साओल में जल क्षेत्र के आस पास तीन मुहांने वाले स्थान पर मछली पकड़ने पर वार्षिक प्रतिबंध लगा दिया है। वर्ष 2011 में चीनी तटरक्षक जहाजों ने फिलीपिंस के ईईजेड के अंतर्गत रीड तट में फिलीपिनी सर्वेक्षण जहाजों का उत्पीड़न किया। 2011 में फिलीपिंस को दिए गए नोट वर्बेले में फिलीपिंस द्वारा रीड तट में 3 और 4 क्षेत्रों हेतु सार्वजनिक संविदा आमंत्रित किए जाने का विरोध करते हुए चीन ने यह दावा किया कि फिलीपिंस की यह कार्रवाई चीन की संप्रभुता और संप्रभु अधिकारों का उल्लंघन है।

2011 में चीनी तटरक्षक जहाजों ने वियतनाम के ईईजेड के अंतर्गत वियतनामी सर्वेक्षण जहाजों का उत्पीड़न किया।

कम से कम 2012 से ही चीन ने सारावक में मलेशिया के ईईजेड के अंतर्गत पूरी तरह से डूबे क्षेत्र जेम्स शोआल में संप्रभु वाला इस्पात चिहृन लगा दिया है। वर्ष 2012 में चीन ने वियतनाम के ईईजेड के भीतर तेल और गैर कंपनियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय बोली का आफर दिया। वर्ष 2013 में चीन ने अपने राष्ट्रीय सीमाओं के रूप में 9-डैश्ड लाइलों को दर्शाते हुए एक आधिकारिक मानचित्र को जारी किया । वर्ष 2014 में चीन के हैनन प्रांत ने 9-डैश्ड लाइनों द्वारा घिरे जलीय क्षेत्र के 2/3 भाग को प्रशासित करने का दावा करते हुए *मत्स्यन विनियमन*जारी किया और विदेशियों को चीनी अधिकारियों द्वारा अनुमति दिए जाने तक इन जलीय क्षेत्रों में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। वर्ष 2014 में चीन ने वियतनाम के ईईजेड के अंतर्गत अपने एचडी 981 ऑयल रिग को स्थापित किया।

2014-2015 में चीन ने फिलीपिंस के ईईजेड और महादेशीय शेल्फ (सीएस) के अंतर्गत एलटीई पर दावा किया था।

चीन ने फिलीपिंस के मध्यस्थता संबंधी मामले को दक्षिण चीन सागर में चीन के राष्ट्रीय संप्रभुता को अस्वीकार करने वाले कानून की शक्ल में एक राजनीतिक उकसावे की कार्रवाई बताया। चीनी अधिकारी ने बार-बार सार्वजनिक रूप से इस पर जोर दिया कि चीन के पास

अपने 9-डैश्ड लाइनों के अंतर्गत दक्षिण चीन सागर पर संप्रभु अधिकार और क्षेत्राधिकार है। अन्यों के साथ-साथ चीन के ये सभी कृत्य नि:संदेह इस बात को प्रदर्शित करता है कि चीन 9-डैश्ड लाइनों के घिरे सभी जलीय क्षेत्रों , समुद्री तटों और भूभाग पर संप्रभु अधिकार और क्षेत्राधिकार का दावा कर रहा है।

जब फिलीपिंस ने 2011 में अपने ही ईईजेड के भीतर रीड तट में क्षेत्र 3 और क्षेत्र 4 के उत्खनन हेतु बोली आमंत्रित की तो चीन ने 4 जुलाई , 2011 को फिलीपिंस को यह कहते हुए एक नोट वर्बेले भेजा : ''चीनी सरकार फिलीपिंस से आग्रह करता है कि वह क्षेत्र 3 और 4 में बोली आफर को तत्काल वापस ले और ऐसी किसी भी कार्रवाई से दूर रहे जो चीन की संप्रभुता और संप्रभु अधिकारों का उल्लंघन करती है।''

वर्ष 2012 में चीन ने वियतनाम के ईईजेड के भीतर ही क्षेत्रों की खोज के लिए अंतरराष्ट्रीय बोली आमंत्रित की। चीन ने इसे ''वर्ष 2012 में विदेशी सहयोग के लिए उपलब्ध पुपील्स रिपब्लिक ऑफ चीन के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत जल क्षेत्रों में खुले ब्लॉक के भाग का स्थान'' का नाम देते हुए प्रकाशित किया। चीनी तटरक्षक जहाजों ने रीड तट में तेल और गैस का सर्वेक्षण करने से फिलीपिन्स अधिकृत जहाजों को रोक दिया है जो जल क्षेत्र पूरी तरह से फिलीपिन्स के ईईजेड के अंतर्गत आता है। 9 डैश्ड लाइन फिलीपिन्स के सबसे बड़े परिचालन गैस क्षेत्र मालम्पाया से होकर गुजरती है जो लुजोन की 40 प्रतिशत ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करता है। मालम्पाया में 10-12 वर्षों में गैस का भंडार समाप्त हो जाएगा।

''राष्ट्रीय सीमाओं'' के रूप में10-डैश्ड लाइनों के साथ चीन का 2013 का मानचित्र

2013 में चीन ने ताइवान के पूर्वी भाग वाले 10 डैश्ड लाइनों को शामिल करते हुए अपना एक नया मानचित्र जारी किया। अपने 2013 के मानचित्र में चीन इस 10-डैश्ड लाइनों पर कानूनी आधार बताए बिना अथवा इन डैशों के लिए निर्धारित समन्वय प्रदान किए बिना अपनी ''राष्ट्रीय सीमा'' के रूप में दावा करता है। 2013 का चीन के मानचित्र को चीन के राष्ट्रीय सर्वेक्षण और मैपिंग ब्यूरो के क्षेत्राधिकार के तहत साइनोमैप प्रेस द्वारा प्रकाशित किया गया था। इसका तात्पर्य है कि 2013 का मानचित्र चीन का सरकारी मानचित्र है। चीन को लिखे अपने 7

जून, 2013 के नोट भर्वले में फिलीपिन्स ने इस पर ‘**कठोर आपत्ति व्यक्त की कि 9 डैश्ड लाइनें पश्चिमी फिलीपिन्स समुद्र/ दक्षिण चीन सागर में चीन की राष्ट्रीय सीमा है**’’।

फिलीपिन्स के पास अपने प्रादेशिक समुद्री भाग और ईईजेड के रूप में छपटी बच जाएगा। फिलीपिन्स और चीन की दक्षिण पालावां में बालाबैक द्वीप से लेकर उत्तरी बाटानेस में यामीन द्वीप तक बड़ी लंबी साझा समुद्री सीमा होगी। ये डैश्ड लाइनें बालाबैक द्वीप से मात्र 64 किमी दूरी पर है और बरगोस , इलेकोस नोर्टे से 70 किमी की दूरी और यामीन द्वीप से 44 किमी की दूरी पर है।

उसके बाद दक्षिण चीन सागर में क्या विवाद है?

देवियों और सज्जनों,

एक क्षेत्रीय विवाद है जिसकी जड़ समुद्र में उपरी भाग में स्थित द्वीपों , चट्टानों और रीफों पर प्रादेशिक दावों संबंधी विवाद में है। एक समुद्री विवाद भी है जिसकी जड़ समुद्री क्षेत्रों में समुद्री दावों में है। इस विवाद में छह देश शामिल हैं जिनकी सीमाएं दक्षिण चीन सागर से जुड़ी हुई हैं यथा चीन , वियतनाम, फिलीपिन्स, मलेशिया, ब्रुनेईऔर इंडोनेशिया। इंडोनेशिया का केवल समुद्री विवाद भर है। सभी विवादी राष्ट्र यूएनसीएलओएस के पक्ष हैं।

चीन का 9-डैश्ड का दावा जिसके माध्यम से चीन आक्रमक तरीके से सभी द्वीपों और इन लाइनों से घिरे हुए जल क्षेत्रों पर ''अविवादित संप्रभुता'' का दावा कर रहा है , दक्षिण चीन सागर विवाद का मुख्य कारक है। चीन का 9-डैश्ड के दावे में संपूर्ण दक्षिण चीन सागर का 85.7 प्रतिशत हिस्सा है। यह दक्षिण चीन सागर के 3.5 मिलियन वर्ग किमी क्षेत्र के 3 मिलियन वर्ग किमी के बराबर का क्षेत्र है।

9-डैश्ड लाइनों के तहत चीन की ''राष्ट्रीय सीमाओं'' का क्या प्रभाव है?

फिलीपिन्स को समग्र रीड तट और मालम्पाया गैस क्षेत्र के भाग सहित पश्चिमी फिलीपिन्स समुद्र से लगता हुआ लगभग 80 प्रतिशत ईईजेड का नुकसान हुआ। मलेशिया को दक्षिण चीन सागर के सामने सबह और सरावक और उसी क्षेत्र में अपने सक्रिय अधिकांश गैस और तेल क्षेत्रों के लगभग 80 प्रतिशत का नुकसान हुआ। वियतनाम को अपने कुल ईईजेड के 50 प्रतिशत का नुकसान हुआ। ब्रुनेई को अपने कुल ईईजेड के लगभग 90 प्रतिशत का नुकसान

हुआ। इंडोनेशिया को नौतुना द्वीप समूह में दक्षिण चीन सागर से लगते अपने ईईजेड के लगभग 30 प्रतिशत क्षेत्र का नुकसान हुआ जिसके आसपास के जलीय क्षेत्रों में दक्षिणपूर्व एशिया में सबसे बड़ा गैस क्षेत्र है।

जेम्स शोआल- चीन की ''दक्षिणतम'' सीमा

चीन जेम्स शोआल पर अपनी दक्षिणतम सीमा के रूप में दावा करता है। जेम्स शोआल जल सतह से 22 मीटर पूर्णत: पानी में डूबा हुआ क्षेत्र है और यह हैनिन द्वीप से 950 समुद्री मील से अधिक दूरी और आईटू अबा से 400 समुद्री मील से अधिक दूरी पर स्थित है। अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार किसी राष्ट्र की सीमा या तो भूमि होनी चाहिए या नदी या प्रादेशिक समुद्र जो उसकी पूर्ण संप्रभुता के अध्यधीन होता है। कोई भी राष्ट्र अपने प्रादेशिक समुद्र से परे पूर्णत: डूबे हुए क्षेत्र को अपना संप्रभु भूभाग नहीं मान सकता है। जेम्स शोआल बिनटुलु, सरावक में मलेशिया की तट से 80 किमी की दूरी पर है जो मलेशिया के ईईजेड के अंतर्गत आता है।

चीनी कृतक बल में दक्षिण चीन सागर के चीनी पुपील्स लिबरेशन आर्मी (पीएलएएन) के समुद्री बेड़े से तीन युद्धक जहाज शामिल थे जिसने दक्षिण चीन सागर में सरावाक , बोरनेओ के तट से दूर जेम्स (जेंगमू) शोआल के जल क्षेत्र में 26 जनवरी , 2014 को एक संप्रभु शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया। सिंगापुर के *स्ट्रेट टाइम्स* में चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता क्विन गैंग को उद्धृत किया कि मलेशिया ने चीन के साथ कोई विरोध नहीं जताया है।

मलेशियाई राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री शहीदान कासिम ने गत 4 जून , 2015 को *फेसबुक* पर इस वक्तव्य के साथ सरावाक से 54 समुद्री मील पर स्थित लुकोनिया शोआल के मानचित्र की स्थिति को पोस्ट किया कि: ''**यह छोटा द्वीप कोई विवादित क्षेत्र नहीं है बल्कि एक विदेशी जहाज विवादित है जो हमारे राष्ट्रीय जल क्षेत्र को अतिक्रमित करता हुआ यहां आया है।** '' शहीदान ने इसका खुलासा किया कि मलेशियाई नौसेना ने इसकी निगरानी करने के लिए चीनी जहाज से एक समुद्री मील की दूरी पर एक जहाज को तैनात किया है। शहीदान ने घोषणा की कि मलेशिया चीन के 9-डैश्ड लाइन के दावे की वैधता को प्रभावी रूप से चुनौती देते हुए एक औपचारिक विरोध दर्ज करेगा। शहीदान ने यह भी खुलासा किया कि मलेशिया इसे प्रचारित किए

बिना ही कई सालों से विरोध करता आया है कि चीन मलेशियाई जल क्षेत्र में प्रतिदिन अतिक्रमण कर रहा है।

लुकोनिया शोआल, जो 100 वर्ग मील के क्षेत्र को कवर करता है , दक्षिण चीन सागर में सबसे बड़ा रीफ का निर्माण करता है। लुकोनिया शोआल , अपनी उच्च लहर वाली विशेषता के कारण तेल और गैस का भंडार है। लुकोनिया शोआल सारावाक , बोरनियो के तट से 54 समुद्री मील पर स्थित है। अप्रैल, 2013 से ही लुकोनिया शोआल में यह चीनी जहाज लंगर डाले हुए है।

चीन द्वारा युद्ध पोतों का बड़े पैमाने पर सतत निर्माण

चीन इस शांति काल के दौरान विश्व इतिहास में किसी भी अन्य देश की अपेक्षा अधिक तेज गति से युद्ध पोतों का व्यापक निर्माण कर रहा है। अमेरिकी नौसेना गुप्तचर कार्यालय के अनुसार ''वर्ष 2014 के दौरान ही साठ से अधिक नौसेना जहाजों की रूपरेखा तैयार की गयी , उनका कार्य शुरू किया गया और इतनी संख्या में 2015 के अंत तक निर्माण किए जाने की आशा है।''चीन ने 19 मार्च, 2015 को अपने कुल योजनागत 40 प्रकार के 056 कोर्वेटे में से 25वां 056 प्रकार के कोर्वेटे को शुरू किया। पीएलए नौसेना का मानना है कि वह 20 ऐसे कोर्वेटों से दक्षिण चीन सागर को नियंत्रित कर सकता है। चीन इस वर्ष 10 ,000 टन वाला एक तट रक्षक जहाज को तैनात करेगा जो विश्व का सबसे बड़ा समुद्री तट रक्षक जहाज है। एक दूसरा 10,000 टन वाला सहयोग जहाज निर्माणाधीन है। चीन के तट रक्षक जहाजों की संख्या जापान , वियतनाम, इंडोनेशिया, मलेशिया और फिलीपिन्स के सभी तट रक्षक जहाजों की कुल संख्या से भी अधिक है। चीन का तट रक्षक जहाजी बेड़ा विश्व के सबसे बड़ा तट रक्षक जहाजी बेड़ा है।

अपने 2015 के ''चीनी सैन्य रणनीति'' के अंतर्गत चीन ''अपतटीय जल क्षेत्र रक्षा'' से संयुक्त ''अपतटीय जल रक्षा'' और ''मुक्त समुद्र सुरक्षा'' पर स्थानांतरित करेगा। सीएमएस का कहना है: ''परंपरागत मानसिकता कि भूमि समुद्र से अधिक महत्वपूर्ण है, को छोड़ा जाना चाहिए तथा **समुद्र और महासागरों के प्रबंधन एवं समुद्री अधिकारों और हितों की रक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।**''

कल उंचाई वाली लहर उठान (एलटीई) जल से घिरी भूमि (चट्टान , रीफ, एटॉल अथवा सेंडबार) के क्षेत्रों को स्वाभाविक निर्माण करता है जो कम उंचाई वाले लहर के उपर होता है किंतु

यह **उच्च लहर में डूबा रहता है।** एलटीई डूबे हुए महाद्विपीय शेल्फ का हिस्सा होता है। एलटीई कोई भूमि अथवा भूभाग नहीं होता और कोई प्रादेशिक समुद्र अथवा प्रादेशिक वायुक्षेत्र नहीं होता है (अनुच्छेद 13, यूएनसीएलओएस)। इस प्रादेशिक समुद्र से परे कोई एलटीई किसी राष्ट्र द्वारा समायोजन के अधीन नहीं होता है (निकारागुआ बनाम कोलंबिया, आईसीजे, 2012)।

चीन के विरूद्ध फिलीपिन्स मध्यस्थता का मामला कोई प्रादेशिक विवाद नहीं है बल्कि **यह एक सामुद्रिक विवाद है** जिसकी व्याख्या करने अथवा यूएनसीएलओएस के अनुप्रयोग की आवश्यकता है:

क्या चीन का 9-डैश्ड लाइन, जिसे मुख्य भूमि से मापा नहीं गया है (और इस प्रकार चीन का टीएस, ईईजेड अथवा सीएस का हिस्सा नहीं है) , वह फिलीपिन्स के 200 समुद्री मील के ईईजेड को अतिक्रमित कर सकता है;
क्या कतिपय भूगर्भीय विशेषताएं यथा मिसचिफ रीफ, सेकण्ड थॉमस शोआल और जॉनसन साउथ रीफ, ये सभी फिलीपिन्स के ईईजेड में हैं , एलटीई हैं और इसलिए यह फिलीपिन्स के डूबे हुए महाद्विपीय शेल्फ का हिस्सा बनते हैं और इस प्रकार फिलीपिन्स के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आते हैं; और क्या सुबी रीफ, जो फिलीपिन्स के ईईजेड के बाहर हैकिंतु इसके महाद्विपीय शेल्फ के अंतर्गत है, एक एलटीई है जिस पर कोई समुद्री हक नहीं है।

क्या कतिपय भूगर्भीय विशेषताएं यथा गवेन रीफ*और मेकेनन रीफ** (ह्यूग्स रीफ सहित) कम उंचाई वाला उठान है जिन पर किसी का भी समुद्री हक नहीं है किंतु उनके कम जल लाइन को आधारिक लाइन निर्धारित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जिससे क्रमश: नामयित द्वीप और सिन कोवे द्वीप के प्रादेशिक समुद्र को मापा जा सकता है।

क्या कतिपय भूगर्भीय विशेषताएं यथा फेरी क्रॉस रीफ और क्युरटेरोन रीफ, जो फिलीपिन्स के ईईजेड से बाहर है किंतु इसके महाद्विपीय शेल्फ में ही है, उच्च लहर पर जल के उपर केवल चट्टाने है और ये ईईजेड नहीं हैं;

क्या स्कारबोरो शोआल, जिस भी राष्ट्र में यह अवस्थित हो, वह केवल 12 समुद्री मील के प्रादेशिक समुद्री क्षेत्र का हकदार है अथवा वह 200 समुद्री मील ईईजेड का भी हकदार है। ये सभी विवाद समुद्री विवाद हैं जिनकी व्याख्या किए जाने की आवश्यकता है अथवा यूएनसीएलओएस के अनुप्रयोग की आवश्यकता है।

फिलीपिन्स उस अधिग्रहण से नियम बनाने के लिए नहीं कह रहा है कि राष्ट्र ने किस द्वीपसमूहों अथवा चट्टानों अथवा उच्च लहर पर जल के उपर की चट्टानों से संबंधित नियम बनाए। फिलीपिन्स अधिकरण से यह कह रहा है कि वह यह नियम बनाए कि किन्हीं द्वीसमूहों अथवा चट्टानों की समुद्री हकदारी (0 , 12 अथवा 200 समुद्री मील) की सीमा क्या है और किसी राष्ट्र ने कितना अधिग्रहण कर रखा है ; और क्या कतिपय भूगर्भीय विशेषताएं एलटीई हैं अथवा नहीं। ये सभी समुद्री विवाद हैं।

सर्वप्रथम इसके निपटान की कोई आवश्यकता नहीं है कि किस देश का अपनी समुद्री हकदारी को सुनिश्चित करने के लिए इन भूगर्भीय विशेषताओं पर संप्रभु अधिकार है। वास्तव में, चीन ने इसे स्वीकार किया कि जब उसने फिलीपिन्स को इसकी सूचना दी कि ''**हमारे कुछ विवादों को यूएनसीएलओएस के अनुसार सुलझाया जा सकता है।**''* चीन ने इस बात को दुहराया जब चीन ने 2002 में आसियान-चीन आचार घोषणा पर हस्ताक्षर किया जिसमें यह व्यवस्था है कि विवाद का निपटारा **समुद्री नियम संबंधी 1982 के संयुक्त राष्ट्र अभिसमय सहित** अंतरराष्ट्रीय नियम के शाश्वत मान्यता प्राप्त सिद्धांतों के अनुसार किया जाएगा।

स्कारबोरो (पेनाटेग) शोआल

किसी को यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि इन चट्टानों पर किस राष्ट्र की संप्रभुता हैजबकि ये चट्टाने मानव जीवन को बनाए रखने अथवा अपने स्वयं के आर्थिक जीवन को बनाए रखने में सक्षम नहीं है। इन चट्टानों पर घास का एक तिनका नहीं होता और न ही इन चट्टानों से एक बूंद पानी निचोड़ा जा सकता है। सबसे बड़ी चट्टा , उच्च लहर पर पानी से उपर 1.2 मीटर उंची केवल 12 समुद्री मील प्रादेशिक समुद्र उत्पन्न कर सकता है हलांकि इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है कि किस राष्ट्र की इस पर संप्रभुता है। क्या चीन अथवा फिलीपिन्स के पास जो स्कारबोरो शोआल पर संप्रभुता है, इस शोआल के समुद्री पात्रता में बदलाव नहीं करेगा।

एक एलटीई के रूप में मिसचिफ रीफ समुद्री तल अथवा महाद्वीपीय शेल्फ का हिस्सा है। प्रादेशिक समुद्र से परे अवस्थित होने के कारण यह विनियोजन में अक्षम होता है अथवा किसी राष्ट्र के स्वामित्व में होने में अक्षम होता है। संक्षेप में कहें तो यह किसी राष्ट्र की संप्रभुता के अध्यधीन नहीं होता है। इस प्रकार, वास्तव में एलटीई की पात्रता को निर्धारित करने के लिए इस पर जिस राष्ट्र की इस पर संप्रभुता है, उसके बारे में जानना बेकार है। इस प्रादेशिक समुद्र से परे कोई एलटीई किसी समुद्री पात्रता को सृजित नहीं करता है।

चीन दावा करता है कि चूंकि मूल सिद्धांत है ‘’**भूमि का समुद्र पर आधिपत्य होता है ,**” इसलिए उक्त भूमि पर समुद्री पात्रता को आवंटित किए जाने से पूर्व संप्रभुता का निर्धारण सर्वप्रथम किया जाना चाहिए। तथापि , 9-डैश्ड लाइन भूमि पर आधारित नहीं है अथवा वहां से नहीं मापा गया है इसलिए यह सिद्धांत लागू नहीं हो सकता है। इस सिद्धांत के प्रतिकूल सिद्धांत प्रयुक्त होता है- **जिसके पास भूमि नहीं होती उस राष्ट्र का किसी समुद्र पर आधिपत्य नहीं होता है।** चूंकि 9-डैश्ड लाइन किसी भूमि से मापित नहीं है और वह इन लाइनों के स्रोत के रूप में भूमि को पूर्णत: नजरअंदाज करता है, इसलिए वे किसी समुद्र पर दावा नहीं कर सकते हैं। यह विवाद की क्या यह 9-डैश्ड लाइनें अथवा ऐतिहासिक अधिकार समुद्री क्षेत्रों पर दावों का आधार हो सकता है , एक विवाद है जिसमें यूएनसीएलओएस की व्याख्या शामिल है और यह अनुच्छेद 298 में किन्हीं अपवादों के तहत नहीं है जिसे अनिवार्य मध्यस्थता से अलग किया जा सकता है।

स्प्रेटलीज में चीन की पुनर्प्राप्ति

चीन का सात रीफों पर दावा चल रहा है यथा फेयरी रीफ , क्यूरटेरोन रीफ, गेवेन रीफ, जानसन साउथ रीफ, मेकेनन रीफ, मिसचिफ रीफ और सुबी रीफ। ये सभी रीफों परा चीन का कब्जा है। तथापि, चीन ने वास्तव में अपने कब्जे वाले सात रीफों के लिए सामग्री भरने हेतु 10 और रीफों की तलछटी की है। * चीन ने बताया है: ‘’इन क्रियाकलापों का प्राथमिक उद्देश्य वहां अवस्थित कार्मिक के कार्य और जीवन दशाओं को सुधार करना , समुद्री अन्वेषण से संबंधिति अपने अंतरराष्ट्रीय दायित्वों को बेहतर तरीके से पूरा करना और बचना , आपदा की रोकथाम और प्रशमन करना तथा चीन को दक्षिण चीन सागर में उसके पड़ोसी देशों और अन्य देशों के जहाजों के परिचालन में बेहतर सेवा मुहैया करना।”**

तथापि, चीन साथ ही यह कहता है कि पुनर्दावा वाले क्षेत्रों में इन असैन्य ढ़ांचे की रक्षा करने के लिए सैन्य सुविधाएं होंगी। चूंकि अमेरिकी राजदूत के चीनी उपराजदूत कूई टंकाई ने बताया , ‘’हां, सैन्य सुविधाएं होंगी।”

यह चीन के 1995 में दिए गए स्पष्टीकरण के समान है जिसने अपने मछुआरों को आश्रय प्रदान करने के लिए मिसचिफ रीफ पर कब्जा कर लिया था जो बाद में सैन्य दुर्ग बन गया। चीन अब मिसचिफ रीफ पर दावा कर रहा है और 500 हेक्टेयर की सैन्य सुविधा में

परिवर्तित हो रहा है।

फेयरी क्रॉस रीफ उच्च लहर पर पानी के उपर लगभग 1 मीटर होता है। यह फिलीपिन्स के ईईजेड के बाहर है किंतु यह उसके महाद्वीपीय शेल्फ में है।

चीन द्वारा पुनर्दावे वाली परियोजनाओं में से एक बंदरगाह के साथ एक एयरबेस वाली परियोजना होगी जिसके 2015 में पूरे हो जाने की आशा है। 3000 मीटर रनवे वाला यह एयरबेस 270 हेक्टेयर वाला पुनर्दावा वाला फेयरी क्रॉस रीफ होगा , जो वुडी द्वीप से बड़ा होगा , चीन का एयरबेस पारासेल में है।

यह पुनर्दावा भी स्प्रेटलीज में 20 सबसे बड़े द्वीपसमूहों के संयुक्त क्षेत्र से भी बड़ा है और हिंद महासागर में अमेरिकी एयरबेस डियेगो गार्सिया द्वीप के क्षेत्र के दोगुने से अधिक है।

एच-6के 2200 किमी दूरी वाली अपनी विंग पायलोन के छह परंपरागत अथवा परमाणु शस्त्र सीजे-10क क्रुज मिसाइलों को ले जा सकता है। यद्यपि , एच-6 का 1968 में प्रथम बार घरेलु रूप से उत्पादन किया गया था , यह एक उन्नत संस्करण है जिसमें संशलिष्ट सामग्रियों , आधुनिक वैमानिकी और एक शक्तिशाली रडारका इस्तेमाल किया गया है , जिसे पहली बार अक्तूबर, 2009 में सेवा में लिया गया था।

जानसन दक्षिण रीफ एक एलटीई है जो फिलीपिन्स के ईईजेड के अंतर्गत है [नोट:चीनी, फिलीपिनी और अन्य देशों के समुद्री चार्ट इसे एक एलटीई के रूप में निर्दिष्ट करते हैं । केवल अमेरिकी समुद्री चार्ट इसे एक उच्च लहर वाली विशेषता के रूप में निर्दिष्ट करता है।

अक्तूबर 1988 में चीनी नौसैनिकों ने जबरन इस एलटीई को सुरक्षा प्रदान कर रहे वियतनामी सैनिकों को वहां से हटा दिया।

लगभग 77 वियतनामी सैनिक इस युद्ध में मारे गए। जॉनसन दक्षिण रीफ फिलीपिन्स के ईईजेड के अंदर है। मैकेनन रीफ एक एलटीई है जो फिलीपिन्स के ईईजेड के अंतर्गत आता है। यह सिनकोवे द्वीप से 12 समुद्री मील की दूरी पर है।

मिसचीफ रीफ

चीन का इस रीफ रिंग के बाईं ओर का दावा 9 किलोमीटर लंबे भूभाग पर है। यदि चीन उपरी भूभाग के किनारे को बंद करता है और लगभग 3.5 किमी के निम्न भूभाग को बंद करता

है तो कुल दावा वाला भाग कम से कम 500 हेक्टेयर हो सकता है। यह क्षेत्र वायु और नौसेना बेस के लिए पर्याप्त है साथ ही हजारों जहाजों की मोर्चाबंदी के लिए भी पर्याप्त होगा। बत्तीस ड्रेजिंग यान, 32 कार्गो यान और तीन महासागर टग मिसचीफ रीफ भूभाग पर लगातार काय कर रहे हैं।

मिसचीफ रीफ एक एलटीई है जो कि पालावन से 125 एनएम, फिलीपींस के ईईजेडसे 200 एनएम के भीतर है। एलटीई की तरह मिसचीफ रीफ फिलीपींस के जलमग्न महाद्वीपीय शेल्फ का हिस्सा है। पालावन और स्पैट्रिल्स के सभी फिलीपीन-कब्जे वाले द्वीपों के बीच मिसचीफ रीफ में एक हवाई और नौसैनिक अड्डे के साथचीन फिलीपीन जहाजों को स्पैट्रिल्स में फिलीपीन के कब्जे वाले द्वीपों की फिर से आपूर्ति करने से रोक सकता है।

जंगली द्वीप का क्षेत्रफल 213 हेक्टेयर है। इसमें 2,700 मीटर का रनवे है जो चीन के चौथी पीढ़ी के सभी लड़ाकू विमानों के साथ-साथ एच-6के रणनीतिक बॉम्बर को भी संभाल सकता है।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले, चीन का सबसे दक्षिणी रक्षा क्षेत्र हैनान द्वीप थी। युद्ध के ठीक बादजापानियों के जाने के बाद चीन अपने रक्षा क्षेत्र को दक्षिण की ओर ले जाते हुएपैरासेल्स के एम्फीट्राइट समूह को अपने कब्जे में ले लिया। 1974 मेंचीन ने अपने रक्षा क्षेत्र को और दक्षिण भाग में विस्तार देते हुए दक्षिण वियतनामी को क्रिसल्स ग्रुप ऑफ पैरासेल्स से जबरन अलग कर दिया। 1988 में, चीन ने जबरन वियतनाम को जॉनसन साउथ रीफ से बाहर निकाल दिया जिससे चीन का रक्षा क्षेत्र स्प्रैटिल्स के दक्षिणी क्षेत्र में विस्तारित हो गया। 1995 में, चीन ने फिलीपींस से मिसचीफ रीफ हड़प कर लियाजोपालावन से सिर्फ 125 एनएम दूरी पर है। 2012 मेंचीन ने फिलीपींस से स्कारबोरो शोआल कब्जा किया जो लूजोन से सिर्फ 124 एनएम की दूरी पर है। 2013 मेंचीन ने सरवाक के तट से सिर्फ 50 NM की दूरी पर मलेशिया से लूसोनिया शोआल को हड़प लिया। 2014 मेंचीन ने वायु और नौसेना के ठिकानों के निर्माण के लिए स्प्रैटिल्स में चट्टानों और जलमग्न क्षेत्रों को फिर से बनाना शुरू कर दिया। चीन ने जून 2015 में घोषणा की कि वह फिलीपींस और ताइवान के बीच बाशी चैनल में नियमित वायु-समुद्री सैन्य अभ्यास आयोजित करेगा। अब लगातार 21 वर्षों तकचीन के रक्षा खर्च में दो अंकों की वृद्धि हुई है।

चीन का दक्षिण चीन सागर में भव्य डिजाइन

चीन का भव्य डिजाइन आर्थिक और सैन्य उद्देश्यों के लिए दक्षिण चीन सागर को नियंत्रित करना है। चीन 9-डैश्ड लाइनों के भीतर सभी मत्स्य , तेल, गैस और खनिज संसाधन चाहता है। चीन के पास 70,000 जहाजों के साथ मछली पकड़ने का सबसे बड़ा बेड़ा है। चीन की प्रति व्यक्ति मछली की खपत दुनिया में सबसे अधिक 35.1 किलोग्राम / वर्ष है , जबकि शेष एशिया में केवल 21.6 किलोग्राम / वर्ष है। चीन दुनिया में पेट्रोलियम का सबसे बड़ा निवल आयातक है। चीन दक्षिण चीन सागर को अमेरिकी पनडुब्बी-शिकार पोसिडॉन हवाई जहाजों या अमेरिकी परमाणु हमले पनडुब्बियों द्वारा निगरानी से मुक्तअपने परमाणु-सशस्त्र पनडुब्बियों के लिए अभयारण्य के रूप में भी चाहता है। स्प्रैटिल्स में होने का दावा स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं हैं, बल्कि चीन की दीर्घकालिक भव्य डिजाइन का हिस्सा है। जैसा कि सरकार से जुड़ी चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज में एशिया प्रशांत सुरक्षा कार्यक्रम के प्रमुख ज़ैंग जी ने कहा था: "चीन लंबे समय से ऐसा करना चाहता है। अब इसमें ड्रेजिंग बोट , धन और लोग हैं, तो यह कर रहा है।"

यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद 192 में कहा गया है , "राष्ट्रों का दायित्व है कि वे समुद्री पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण करें।" स्प्रैटिल्स में चीन का बड़े पैमाने पर और प्रचंड पुनर्निर्माण समुद्री पर्यावरण को नष्ट कर रहा है।

यूएनसीएलओएसके अनुच्छेद 123 में अर्द्ध परिबद्ध समुद्रों में स्थित तटीय राष्ट्रों को "अपने अधिकारों के प्रयोग में एक दूसरे के साथ सहयोग करने तथा समुद्री पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के संबंध में इस अभिसमय xxx के तहत अपने कर्तव्यों के पालन में सहयोग करने की आवश्यकता है।" चीन ने अन्य तटीय राष्ट्रों के साथ परामर्शया सहयोग के बिना दस अन्य रीफ्स को नष्ट करते हुएस्पैरटिल्स में सात भूगर्भिक विशेषताओं पर पुन: दावा किया। यूएनसीएलओएस के तहत मध्यस्थता के लिए राष्ट्रों का दायित्व है कि "विवाद को सुलझाने में इसे और गंभीर न बनाए ,'' और यह दायित्व है कि "एक अपरिवर्तनीय स्थिति नहीं बनाए और विशेष रूप से मध्यस्थता के उद्देश्य से निराश नहीं करें। मिसचीफ रीफ-पर्यावरण संबंधी चिंताएं।

मिशिफ़ रीफ़ जैसे एटोल के निर्माण में 30 मिलियन वर्ष लगते हैं। रीफ मछली का प्रजनन स्थल है। स्प्रैटिल्स मेंमछली द्वारा दिए गए अंडे और लार्वा सलू सागर , पलवन, लुज़ोन,

मलेशिया, ब्रुनेई, इंडोनेशिया और वियतनाम के तटों तक धाराओं के साथ जाते हैं। एक बार जब चट्टान को सहारा देने वाली रेत हट जाती है , तो चट्टानें गिर जाती हैं। रीफ को बढ़ने के लिए साफ पानी की जरूरत होती है। रिक्लेमेंशन से जल क्षेत्र अशांत हो जाते हैं , चट्टानों और मछलियों के लिए अस्वास्थ्यकर बन जाते हैं। चीन स्प्रैटिल्स में सात (7) भित्तियों पर पुन: दावा कर रहा है। दक्षिण चीन सागर में प्रवाल भित्तियों में दुनिया के कुल प्रवाल भित्तियों का 34% शामिल है,जबकि दक्षिण चीन सागर में विश्व के कुल महासागर और समुद्र की सतह का केवल 2.5% हिस्सा है।

टियांग जिंग हाओ ड्रेजर , जर्मन इंजीनियरिंग कंपनी वोस्टा एलएमजी द्वारा डिज़ाइन किया गया 127 मीटर लंबा सी-कटर कटर चूषण ड्रेजर। 6,017 सकल टन वाला यह ड्रेजर एशिया में सबसे बड़ा है। चीन के पास स्प्रैटिल्स में दर्जनों ड्रेजर हैं।

संचालन राज्यों के संबंध में 2012 की आसियान-चीन घोषणा:

"विभिन्न पक्ष ऐसी गतिविधियों को करने में आत्मसंयम बरते जो अन्य बातों के साथ-साथ विवादों को जटिल बना सकता है अथवा विवादों को बढ़ा सकता है और शांति व स्थिरता को प्रभावित कर सकता है तथा वर्तमान में निर्जन द्वीपों , रीफ, शोआल, केय और अन्य स्थानों पर अवासन कार्रवाई से संयम बरते हुए और रचनात्मक तरीके से उनके बीच मतभेदों को दूर करना चाहिए।"

केवल सटे हुए तटीय राज्य के पास कृत्रिम द्वीपसमूहों को सृजित करने , अथवा अपने ईईजेड अथवा सीएस के अंतर्गत एलटीई पर संरचना तैयार करने का अधिकार है (यूएनसीएलओएस का अनुच्छेद 60 और 80)।इस प्रकार किसी तटीय राष्ट्र के ईईजेड अथवा सीएस के अंतर्गत बनाए गए कृत्रिम द्वीपसमूहों अथवा ढ़ांचा निर्माण यूएनसीएलओएस के तहत गैर कानूनी हैं।

इस प्रकार यूएनसीएलओएस के भाग छह अनुच्छेद 60 जो ''कृत्रिम द्वीपसमूह, विशेष आर्थिक जोन में स्थापन और ढ़ांचा'' से संबंधित है, कहता है:

*“1.**विशेष आर्थिक जोनमें, तटीय राज्य के पास निर्माण करने का विशेष अधिकार होगा और वह निर्माण, अभियान और निम्न उपयोग के प्राधिकृत होगा और नियमन करेगा:***

(क**)** कृत्रिम द्वीपसमूह**;**

(ख**)** अनुच्छेद 56 (समुद्री तटमें निर्जीव संसाधनों का दोहन , समुद्री विज्ञान अनुसंधान , समुद्री वातावरा की सुरक्षा और संरक्षा) और अन्य आर्थिक उद्देश्यों हेतु प्रदत्त उद्देश्यों के लिए स्थापना और ढ़ांचा निर्माण**;**

(ग)xxx.”

“2. तटीय राष्ट्र के पास कृत्रिम द्वीपों , प्रतिष्ठानों और संरचनाओं पर विशेष अधिकार होगा और साथ ही सीमा शुल्क , राजकोष, स्वास्थ्य सुरक्षा एवं आब्रजन कानून एवं विनियमन के संबंध में क्षेत्राधिकार होगा।”

यूएनसीएलओएस के भाग छह का अनुच्छेद 80 , जो कृत्रिम द्वीपों , प्रतिष्ठानों और महाद्वीपीय शेल्फ संबंधी ढ़ांचों से संबंधित है, में कहा गया है:

“अनुच्छेद 60 महाद्वीपीय शेल्फ के संबंध में कृत्रिम द्वीपों , प्रतिष्ठानों और संरचनाओं पर आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होता है।”

स्पष्टत: फिलीपिंस के ईईजेड और महाद्वीपीय शेल्फ में एलटीई संबंध दावा यूएनसीएलओएस का उल्लंघन करता है और इस पकार यह अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत गैर कानूनी है।

अनुच्छेद 87, भाग सात उच्च समुद्र संबंधी स्वतंत्रता

1. उच्च समुद्र सभी राष्ट्रों के लिए खुले हैं , चाहे तटीय हों या भूमि से घिरे हुए। इस अभिसमय और अंतरराष्ट्रीय कानून के अन्य नियमों द्वारा निर्धारित शर्तों के तहत उच्च समुद्र की स्वतंत्रता का प्रयोग किया जाता है। इसमें अन्य बातों के साथ-साथ तटीय और भूमि घिरे दोनों तरह के राष्ट्रशामिल है:

(क) xxxxxx

(घ**)** अध्याय छह के अध्यधीन अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अनुमत्य कृत्रिम द्वीपसमूहों और अन्य प्रतिष्ठानों के निर्माण की स्वतंत्रता;*[*नोट:अनुच्छेद 80*,* भाग छह का संदर्भ*]*

xxx.

अनुच्छेद 87 (घ) केवल तभी लागू होता है जब कोई तटीय राष्ट्र अपने ईईजेड से परे महाद्वीपय शेल्फ पर दावा नहीं कर सके क्योंकि उसके भूमि आकार से उसकी महाद्वीपीय शेल्फ का कोई प्राकृतिक प्रवर्धन नही होता है।

इसके बावजूद उच्च समुद्र में निर्मित कोई कृत्रिम द्वीप अथवा प्रतिष्ठान केवल असैन्य शांति उद्देश्यों के लिए होना चाहिए क्योंकि यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद में यह प्रावधान है कि उच्च समुद्र को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए आरक्षित रखा जाएगा।‘’

क्या एलटीई और कृत्रिम द्वीपसमूहों में उच्च लहर पर जल के उपर उनके दावे से कोई समुद्री क्षेत्र अधिग्रहण करता है?

जी नहीं। यूएनसीएलओएस जल से धिरे हुए क्षेत्र और उच्च लहर के उपर के प्राकृतिक रूप से बने क्षेत्र के रूप में एक द्वीप के रूप में परिभाषित करता है। (अनुच्छेद. 121,यूएनसीएलओएस)

यूएनसीएलओएसका अनुच्छेद 60(8)में प्रावधान है:

“8. कृत्रिम द्वीप समूह, प्रतिष्ठापन और संरचनाओं को द्वीपसमूहों का दर्जा नहीं दिया जाता है। उनमें उनकाअपनाप्रादेशिक समुद्र नहीं होता है और उनकी उपस्थिति से प्रादेशिक समुद्र की परिसीमा, विशेष आर्थिक क्षेत्र अथवा महाद्वीपीय शेल्फ को प्रभावित नहीं करता है।”

एलटीई से पुन: दावे के किए गए कृत्रिम द्वीपसमूह अथवा प्रादेशिक समुद्र से परे डूबे क्षेत्र भूमि या द्वीप भूभाग नहीं होते हैं और इस प्रकार इनमें प्रादेशिक समुद्र या प्रादेशिक वायुक्षेत्र नहीं होते हैं।

कृत्रिम द्वीपों पर एलटीई से प्रादेशिक समुद्र से परे पुनर्दावा किया गया यथा मिसचीफ रीफ, जॉनसन साउथ रीफ और सुबी रीफ:

1. पानी के उपर ये द्वीप या चट्टान उच्च लहर पर है;
2. यहां प्रादेशिक समुद्र नहीं है;
3. यहां प्रादेशिक वायुक्षेत्र नहीं है;
4. यहां ईईजेड या सीएस नहीं हैं;

5. यदि ये चीजें गैर कानूनी तरीके से (जैसा कि चीन ने किया है) खड़ा किया गया है, 500 मीटर का सुरक्षा जोन भी नहीं है।

उच्च लहर के उपर किसी चट्टान , यथा फेरी क्रॉस रीफ अथवा क्यूरटेरोन रीफ , पर पुन: दावा इंसुलर भूमि क्षेत्र का एक विस्तार है। उच्च लहर से उपर पानी के उपर चट्टान भूमि प्रदेश है जो निम्न सृजित करता है-

1. 12 समुद्री मील प्रादेशिक समुद्र; और
2. ऐसे भूमि प्रदेश और इसके प्रादेशिक समुद्र के उपर प्रादेशिक वायुक्षेत्र।

उच्च लहर पर जल के उपर किसी चट्टान पर पुन: दावा यूएनसीएलओएसके तहत वैध है।

अधिकरण के समक्ष फिलीपींस कैसे साबित कर सकता है कि मिसचीफ रीफ , गेवेन रीफ, सूबी रीफ और मैककेनन रीफ एलटीई हैं जब चीन ने उन्हें पहले ही रेत से ढक दिया है और ये भूगर्भिक विशेषताएं अब स्थायी रूप से उच्च ज्वार के पानी में हैं?

फिलीपींस दिखा सकता है कि पुनर्दावे से पहले चीन के अपने समुद्री चार्ट में इन चार भूगर्भिक विशेषताओं को एलटीई के रूप में नामित करते हैं , जैसे कि फिलीपीन समुद्री चार्ट। अन्य देशों जैसे कि यूनाइटेड किंगडम , संयुक्त राज्य अमेरिका , जापान, रूस और वियतनाम के समुद्री चार्टएलटीईके रूप में इन भूगर्भिक विशेषताओं में एक समान हैं।

ऐसा कोई कानूनी आधार नहीं है। समुद्र से जुड़े कानून में अच्छी तरह से निहित सिद्धांत यह है कि "भूमि समुद्र पर हावी है।" इसका मतलब है कि चीन जैसे गैर-द्वीपसमूह राष्ट्रों के लिएसभी समुद्री क्षेत्रों को महाद्वीपीय भूमि , द्वीप अथवा चट्टान के तट के साथ"बेसलाइन से मापा जाएगा"(यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद 3, 57 और 76)। चीन की 9-डैश्ड रेखाओं को इसके तट के साथ आधार रेखाओं से नहीं मापा जाता है , और इस प्रकार वैध रूप से समुद्री क्षेत्रों को बनाने के लिए यूएनसीएलओएसके तहत बुनियादी आवश्यकता का अनुपालन नहीं करता है।

उच्च समुद्र सदा ही वैश्विक साझेदारी का हिस्सा रहा है चाहे यूएनसीएलओएसके पूर्व या उसके बाद। उच्च समुद्र किसी राष्ट्र की संप्रभुता के अध्यधीन नहीं है चाहे यूएनसीएलओएसके पूर्व या उसके बाद।

यूएनसीएलओएसकहता है: “उच्च समुद्र सभी राष्ट्रों के लिए खुला है चाहे वह राष्ट्र तटीय क्षेत्र में स्थित हो अथवा भूमि से घिरा। उच्च समुद्र की स्वतंत्रता xxx में अन्य बातों के साथ-साथ xxx मछली पकड़ने की स्वतंत्रता शामिल है ” (अनुच्छेद 87,यूएनसीएलओएस)। यूएनसीएलओएसकहता है: “कोई भी राष्ट्र अपनी संप्रभुता के लिए उच्च समुद्र के किसी भाग के अध्यधीन वैध रूप से दावा नहीं कर सकता है।” (यूएनसीएलओएसका अनुच्छेद 89)।

किसी अन्य राष्ट्र के ईईजेडमें प्राकृतिक संसाधनों का दावा करने के लिए ऐतिहासिक अधिकार या ऐतिहासिक हक नहीं इस्तेमाल किया जा सकता है। यूएनसीएलओएसने तटीय राष्ट्रों को अपने ईईजेड के दोहन के लिए "संप्रभु अधिकार" प्रदान किया। "संप्रभु अधिकार" का अर्थ है सर्वोच्च अधिकार, अन्य राष्ट्रों के अधिकारों से श्रेष्ठ। इसने एक तटीय राष्ट्र के ईईजेड में अन्य राज्यों द्वारा सभी ऐतिहासिक अधिकारों या दावों को समाप्त कर दिया। शब्द ईईजेडमें "विशेष" का अर्थ है कि क्षेत्र का आर्थिक दोहन आसन्न तटीय राष्ट्र के लिए विशेष है।
"[I] चतटीय राष्ट्र महाद्वीपीय शेल्फ का पता नहीं लगाता है या अपने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं करता है, कोई भी राष्ट्र तटीय राष्ट्र की सहमति के बिना ऐसी गतिविधियां नहीं कर सकता है" (अनुच्छेद 77 [2])। यह एक तटीय राष्ट्र के महाद्वीपीय शेल्फ में अन्य राष्ट्रों द्वारा दावा किए गए ऐतिहासिक अधिकारों के आवेदन के लिए एक निषेध है। एक राष्ट्र की महाद्वीपीय शेल्फ में उनके ईईजेडऔर विस्तारित महाद्वीपीय शेल्फ शामिल है।

हैनान के प्रशासन के तहत समावृत जल क्षेत्र में दक्षिण चीन सागर के 3.5 वर्ग किलोमीटर कुल सतह क्षेत्र में से 2 मिलियन वर्ग किलोमीटर शामिल है। चीन दक्षिण चीन सागर में कुल 3 मिलियन वर्ग किलोमीटर या 85.7% पानी का दावा करता है। मैक्किसफील्ड तट ,जो उच्च समुद्रों का हिस्सा है, समावृत जल के भीतर है।

हैनान प्रांत के 2014 मत्स्य विनियम के अनुच्छेद 35, जो 1 जनवरी 2014 को प्रभावी हुआ, में यह अधिदेशित है कि"इस प्रांत (हैनान) के अधिकार क्षेत्र के तहत जल क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए मत्स्य संचालन या मत्स्य संसाधन सर्वेक्षण में शामिल होने वाले विदेशी मछली पकड़ने वाले जहाज राष्ट्र परिषद् के संगत विभागों से अनुमोदन प्राप्त करेंगे।"

मछली पकड़ने संबंधी विनियम मैक्शेसफील्ड तट पर लागू होते हैं जो उच्च समुद्रों का हिस्सा है। इसके अलावा, **1999** के बाद से हैनान ने मई के अंत से जुलाई के अंत तक पेरासेल और मैकरेस्फ़ीफील्ड तट और स्कारबोरो शोआल के आसपास के जल क्षेत्रमें मछली पकड़ने पर एकतरफा प्रतिबंध लगा दिया है। प्रतिबंध का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना, मछली पकड़ने के उपकरण को जब्त करना और यहां तक कि आपराधिक आरोप भी शामिल हैं।

दक्षिण चीन सागर के ऊँचे समुद्रों में अपने लिए मत्स्य संसाधन पर कब्जा करते हुए चीन वैश्विक साझा संसाधनों की एक बड़ी चोरी कर रहा है। सभी राष्ट्र ,तटवर्ती और भू-आबद्ध राष्ट्र दक्षिण चीन सागर विवाद में रुचि रखने वाले पक्षकार हैं क्योंकि चीन उच्च समुद्र में अपने लिए मत्स्य संसाधनों पर कब्जा कर रहा है।

2002 में आसियान-चीन घोषणा के तहत यह कहा गया है कि दक्षिण चीन सागर विवाद को "अंतराष्ट्रीय कानून के सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त सिद्धांतों के अनुसार , 1982 में समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय के तहत हल किया जाएगा।”

फिलीपींस ने जनवरी 2013 में यूएनसीएलओएसके तहत चीन के खिलाफ अपने मध्यस्थता मामले को दायर किए जाने के बादचीन के विदेश मंत्री वांग यी ने घोषणा की कि दक्षिण चीन सागर विवाद को "ऐतिहासिक तथ्यों और अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार" हल किया जाना चाहिए।

1136मेंसोंग राजवंश के काल से 1912 में किंग राजवंश के अंत तक चीन के आधिकारिक और अनौपचारिक नक्शे दौरान बताते हैं कि चीन का सबसे दक्षिणी क्षेत्र हमेशा हैनान द्वीप रहा है। 1636 से 1933 तक फिलीपींस के आधिकारिक और अनौपचारिक मानचित्र बताते हैं कि स्कारबोरो शोआल हमेशा फिलीपींस का हिस्सा रहा है। स्कारबोरो शोआल का पहला नाम "पनाकोट" है, जो 1734 में मनीला में प्रकाशित मुरिलो वेलार्डे मानचित्र में दिखाई दिया।

इस मानचित्र को 1136 ई में सोंग राजवंश के दौरान फूचांग में पत्थर से उकेरा गया था। फ्रांस में 1903 (?) में मानचित्र का एक पत्थर पर प्रकाशित किया गया था। पत्थर बना इस मानचित्र का शीर्षक "हुआ यी तू" या चीन और बर्बर देशों का मानचित्र है। पत्थर पर बना यह मानचित्र अब चीन के शीआनमें वन स्टेललेस संग्रहालय के जंगल में है। यह मानचित्र चीन के

दक्षिणी क्षेत्र के रूप में हैनान द्वीप को दर्शाता है। इस मानचित्र के किनारों पर टिप्पणी पत्थर की नक्काशी का हिस्सा नहीं हैं। यह डिजिटल चित्रण अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस से है (कैटलॉग नंबर 2002626771; डिजिटल आईडीजी 7820 सीटी000284)।

मिंग राजवंश द्वारा 1602 में बीजिंग में प्रकाशितयह मानचित्र "कुन्यू वांगु क्वांटु" या दुनिया के असंख्य देशों का मानचित्र’’ शीर्षक से है। जेसुइट पुजारी माटेओ रिक्की ने मिंग सम्राट वनली के अनुरोध पर यह मानचित्र बनाया। रिक्की की सहायता झोंग वेन्ताओ , ली झिजाओ और अन्य चीनी विद्वानों ने की थी। यह मानचित्र चीन के दक्षिणी क्षेत्र के रूप में हैनान द्वीप को दर्शाता है। यह डिजिटल मानचित्र अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (कैटलॉग संख्या 2010585650; डिजिटल आईडी जी3200 ईएक्स000006जेडए, बीऔर जी3200एमजीईएक्स00001) से है।

चीन में 1896 में गुआंग्शु बिंग शेन द्वारा प्रकाशितयह मानचित्र "हुआंग चाओ झि शेंग यू दी क्वान तू" शीर्षक से है या किंग साम्राज्य के सभी प्रांतों का पूरा मानचित्र है। यह मानचित्र चीन के दक्षिणी क्षेत्र के रूप में हैनान द्वीप को दर्शाता है। यह डिजिटल मानचित्र अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (कैटलॉग संख्याजीएम 71005083; डिजिटल आईडी जी 7820 सीटी003428) से है।

1636 में फ्रैंकफर्ट में मानचित्र निर्माता मैथ्युज मेरियन द्वारा प्रकाशितयह मानचित्र "चाइना वेटरिबस सिनारुम रेजियो नुन्क इनकॉलिस तम डिक्टा" शीर्षक से है। यह मानचित्र चीन, कोरिया, जापान, ताइवान और उत्तरी लूज़ोन को दर्शाता है। मध्य लूज़ोन के तट पर पश्चिमी ओर "पी. डे मनडेटो" शब्दों के नीचे एक अनाम शोआल है। स्पैनिश वाक्यांश"पी. डी मांडेटो ”का अर्थ है कमान बिंदु - जिसका अर्थ है कि उस तटीय स्थान पर एक स्पेनिश सैन्य चौकी थी। इस तटीय जगह से अनाम शोआल को बाद में जेसुइट पेड्रो मुरिलो वेलार्डे द्वारा "पनाकोट" कहा गया। यह डिजिटल मानचित्र बैरी लॉरेंस रुडरमैन एंटीक मैप्स , इंक (http://www.raremaps.com/gallery/detail/36716) से है।

जेसुइट पेड्रो मुरिलो वेलार्दे द्वारा मनीला में 1734 में प्रकाशितयह मानचित्र "कार्टा हाइड्रोग्राफिकेये कोरियोग्राफिका डी लास यसलस फिलीपिनास" शीर्षक से है। यह सबसे पुराना

मानचित्र है जो "पैनकोट" शोआल को एक नाम देता है। पैनकोटधमकी या खतरे के तागालोग शब्द हैं। इस 1734 मानचित्र से पहले, किसी भी मानचित्र ने इस शोआल को कभी नाम नहीं दिया था। चीन द्वारा9-डैश्ड लाइनों के मानचित्र खींचे जाने से पूर्वस्कारबोरो शोआल का 213 साल पहले एक तागालोग नाम था। स्प्रैटिल्स को इस 1734 मानचित्र पर "लॉस बजोस डी परागुआ" के रूप में दिखाया गया है , जिसका अर्थ है परागुआ का शोआल। पलावन का पुराना स्पेनिश नाम परागुआ है। मुरीलो वेलार्डे के मानचित्र में स्वयं दो फिलिपिनो , फ्रांसिस्को सुआरेज़ का नाम है , जिन्होंने मानचित्र को तैयार किया और निकोलस डेला क्रूज़ बागे जिन्होंने इसे उकेरा। इस मानचित्र को "फिलीपीन के सभी मानचित्रों की जननी माना जाता है। यह डिजिटल मानचित्र अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (कैटलॉग संख्या 2013585226; डिजिटल आईडी जी 8060 सीटी003137) से है।

मैसास्पिना अभियान के सर्वेक्षणों से *डाइरेकियन डी हिड्रोग्राफिका* द्वारा मैड्रिड में प्रकाशित किया गयायह 1792 चार्ट (प्लेनो डी ला नाविकियन) एलेसेंड्रो मलस्पिना के जहाज स्टै लुसिया द्वारा लिया गया नेविगेशन का मार्ग है जब मालेस्पिना ने सर्वेक्षण किया कि चार्ट "बाजो मासिनलॉक ओ स्कारबोरो" के रूप में क्या बताता है। 4 मई, 1792 कोजिस दिन उन्होंने बाजो मासिनलोक का सर्वेक्षण किया था, एलेसेंड्रो मलास्पिना ने अपने जर्नल "इस (इस शोआल)" पर लिखा है कि स्पेनिश और विदेशी जहाज खो गए हैं।" यह डिजिटल मानचित्र मैड्रिड में फिलीपीन दूतावास द्वारा कॉपी किए गए म्यूज़ो नेवल डी मैड्रिड के अभिलेखागार से है।

1933 में मनीला में प्रकाशित और 1940 में यूएस कोस्ट एंड जियोडेटिक सर्वे द्वारा वाशिंगटन डी.सी. में पुन: प्रकाशित यह मानचित्र "फिलीपीन द्वीप समूह" शीर्षक से है। यह मानचित्र गहन ध्वनि के साथ "स्कारबोरो" शोआल को दर्शाता है। यह डिजिटल मानचित्र अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस (कैटलॉग संख्या 2011592026, डिजिटल आईडी जी8061पीसीटी003542) से है।

जब क्विंग वंश का 1912 में अंत हो गया तो डॉ. सुन यट सेन की अगुवाई वाले चीनी गणतंत्र ने रिपब्लिक आफ चीन की स्थापना की। रिपब्लिक आफ चीन के संविधान के निम्नलिखित पांच (5) के उपबंध में दिया गया है:
11 मार्च, 1912 के रिपब्लिक आफ चीन के औपबंधिक संविधान के अनुच्छेद 3 , अध्याय 1 में दिया

गया है: “रिपब्लिक आफ चीन के भूभाग में 22 प्रांत, आंतरिक और बाह्य मंगोलिया, तिब्बत और क्विनघाई शामिल है।” जैसा कि हमने क्विंग वंश के 1896 के मानचित्र में देखा है कि 22 प्रांतों में से एक प्रांत ग्वांगडोंग है जिसमें चीन के दक्षिणतम भूभाग के रूप में हैनान द्वीप शामिल हैं।

1 मई, 1914 के रिपब्लिक आफ चीन के संविधन के अनुच्छेद 3, अध्याय 1 में कहा गया: ‘’रिपब्लिक आफ चीन का भूभाग पूर्व साम्राज्य का भूभाग बना रहेगा। ‘’ *रेगुलेशंस ऑफ द रिपब्लिक आफ चीन कंसर्निंग रूल ओवर तिब्बत* (1999) में एक संपादकीय टिप्पणी में ‘’पूर्व साम्राज्य’’ शब्दों को ‘’क्विंग वंश के साम्राज्य’’ के संदर्भ में किया गया है।

10 अक्तूबर, 1924 के रिपब्लिक आफ चीन के संविधान के अनुच्छेद 3, अध्याय 2 में कहा गया: ‘’रिपब्लिक आफ चीन का भूभाग परंपरागत भूभाग बना रहेगा। ‘’ 1 जनवरी, 1937 के रिपब्लिक आफ चीन के संविधान में कहा गया: “रिपब्लिक आफ चीन का भूभाग पूर्व में स्वाधिकृत इसके भूभाग बने रहेंगे।”

25 दिसम्बर, 1946 के रिपब्लिक आफ चीन के संविधान के अनुच्छेद 4 , अध्याय 1 में दिया गया है: ‘’रिपब्लिक आफ चीन का भूभाग इसकी परंपरागत सीमाओं द्वारा घिरा क्षेत्र होगा।‘’

ये सभी संवैधानिक उपबंध *रेगुलेशंस आफ द रिपब्लिक आफ चीन कंसर्निंग रूल ओवर तिब्बत* शीर्षक (1 जनवरी , 1999 के चीन अंतरराष्ट्रीय प्रेस , चीन संख्या 2 ऐतिहासिक अभिलेखागार) से पुपील्स रिपब्लिक आफ चीन के सरकारी प्रकाशन से हैं।

1932 में चीन दुनिया को बताता रहा है कि इसकी दक्षिणतम सीमा हैनान द्वीप है किंतु हैनान द्वीप में पारासेल शामिल था। पारासेल के फ्रांसीसी कब्जे का विरोध करते हुए 29 सितम्बर, 1932 को फ्रांस सरकार को भेजे *नोट भर्वेले* में चीनी सरकार ने आधिकारिक रूप से घोषणा की थी:

“*फ्रांस के विदेश मंत्रालय, पेरिस को चीन के प्रतिनिधि से 29 सितम्बर, 1932 का नोट।*

अपनी सरकार के अनुदेशों पर फ्रांस में चीनी गणतंत्र के प्रतिनिधि के पास पारासेल द्वीपसमूहों के विषय पर 4 जनवरी , 1932 के विदेश मंत्रालय के नोट के लिए अपने सरकार के उत्तर को प्रेषित करने का गौरव हासिल है।”

“xxx पूर्वी समूह को एम्फीट्रिटिस कहा जाता है और पश्चिमी समूह को क्रेसेंट। यह समूह हैनान द्वीप से 145 समुद्री मील की दूरी पर है और चीनी भूभाग के दक्षिणतम भाग का हिस्सा है।’’(इस बात पर जोर दिया गया)xxx[स्रोत: *सोवरंटी ओवर द पारासेल एंड स्प्रैटली आइजलैंड्स*, मोनीक केमेलियर, अनुबंध 10, क्लुवेरलॉ इंटरनेशनल, 2000]

चीनी मानचित्र जिसे 1930 और 1940 में चीन के भाग के रूप में पारासेन को दर्शाते हुए प्रकाशित किया गया था, के बावजूद 1937 और 1946 के चीनी गणतंत्र के संविधान में अभी भी यह घोषित है कि इसका भूभाग पूर्व साम्राज्य के भूभाग के रूप में है।

चीन के मनीला दूतावास की वेबसाइट में चीन स्कारबोरो शोआल पर दावा करता है क्योंकि यह शोआल कथित रूप से *नन्हाई* द्वीप है जहां गोउ शोउजिंग 1279 में गए थे और जहां उन्होंने एक खगोलीय वेधशाला बनवाया था। यह वेबसाइट बताता है कि:

हुआंगयेन द्वीपसमूह की पहली बार खोज की गयी और इसे चीन के युआन वंश (1271-1368 ई.) में चीन के मानचित्र पर चित्रित किया गया। 1279 ई. में चीनी खगोलशास्त्री गोउ शाउजिंग ने कुबलई खान के लिए चीन के चारों ओर समुद्र का सर्वेक्षण कार्य किया और हुआंगयेन द्वीप को दक्षिण चीन सागर में एक बिंदु के रूप में चुना गया।

तथापि, 30 जनवरी, 1980 को चीन की झिशा और ज़ोंगशा द्वीप पर संप्रभुता शीर्षक से एक दस्तावेज जारी किया गया था कि ये द्वीपसमूह अविवादित हैं जिसे चीन के विदेश मंत्रालय ने आधिकारिक तौर पर घोषित किया था कि 1279 में गुओ शॉजिंग द्वारा दौरा किए गए नानहाई द्वीप झिशा में है अथवा जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पैरासेल्स कहा जाता है ,जो स्कारबोरो शोआल से 380 एनएम से अधिक द्वीपों का एक समूह है। चीन ने यह आधिकारिक दस्तावेज जारी किया ताकि वह वियतनाम के पैरासेल्स के उनके मजबूत ऐतिहासिक दावों का सामना कर सके। बीजिंग रिव्यू, अंक सं.7 में 18 फरवरी, 1980 को प्रकाशित यह चीनी आधिकारिक दस्तावेज बताता है:

“झिशा और नन्शा द्वीपसमूहों पर चीन की अविवादित संप्रभुता”

"युआन राजवंश के शुरूआत में पूरे देश में 27 स्थानों पर एक खगोलीय अवलोकन किया

गया था। Xxx युआन राजवंश के आधिकारिक इतिहास के अनुसार, नन्हाई, गॉ का अवलोकन बिंदु, "ज़ूआ के दक्षिण में" था और "सर्वेक्षण के परिणाम से पता चला कि नन्हाई का अक्षांश 15 ° उत्तरहै।" खगोलीय प्रेक्षण बताता है कि नानहाई आज का झिशा द्वीप था। यह दर्शाता है कि युआन वंश के समय में चीन के सीमा के भीतर झिशाद्वीपसमूह थे। ”(जोर देकर कहा) गोउ शोउजिंगने 27 खगोलीय वेधशालाएं बनवाईं, मुख्य भूमि पर 26 और दक्षिण सागर (नन्हाई) में एक द्वीप पर एक वेधशाला का निर्माण कराया। चीन अब यह दावा नहीं कर सकता कि स्कारबोरो शाल दक्षिण सागर द्वीप है जिसे गुओ शॉजिंग ने 1279 में दौरा किया था क्योंकि चीन ने 1980 में पहले ही घोषित कर दिया था कि गौ शॉजिंग पैरासेल्स का दौरा किया जहां उन्होंने खगोलीय वेधशाला का निर्माण किया। इसके अलावा, चीन में अन्य जगहों पर बड़े पैमाने पर बने खगोलीय वेधशालाएं जो गुओ शॉजिंग में खड़ी की गई थीं , संभवतः स्कारबोरो शोआल की छोटी चट्टानों पर फिट नहीं हो सकती हैं।

हेनान प्रांत में यह 12.6 मीटर ऊंचे चट्टान पर बना वेधशाला है ,जो युआन राजवंश के दौरान निर्मित 27 वेधशालाओं में से एकमात्र खगोलीय वेधशाला है जिसेगुओ शौजिंग ने बनवाया था।

स्कारबोरो शोआल की सबसे बड़ी चट्टान, साउथ रॉकउच्च ज्वार पर जल क्षेत्र से सिर्फ 1.2 मीटर ऊपर हैऔर वहां 6 से 10 से अधिक लोग खड़े नहीं हो सकते हैं। संचालित होने के लिएगुओ शॉजिंग की वेधशालाओं में लोगों को नियुक्त करना पड़ेगा क्योंकि प्रतिदिन मापना होता है। स्कारबोरो शोआल पर इस तरह की वेधशाला को खड़ा करना या संचालित करना वास्तविक रूप से असंभव है।

सितंबर 2014 में, ताइवान के राष्ट्रपति मा यिंग , जोकुओमितांग पार्टी से संबंधित हैं , जिन्होंने 1947 में चीनी मुख्य भूमि सरकार को नियंत्रित किया था , जिसने 9-डैश्ड लाइनों को अपनाया,इनलाइनों के तहत चीन के दावे की सीमा को स्पष्ट किया।

राष्ट्रपति मा ने घोषणा की कि यह दावा केवल द्वीपों और उनके निकटवर्ती 3 एनएम (अब 12 एनएम) क्षेत्रीय समुद्र तक सीमित था। राष्ट्रपति मा ने असमान रूप से कहा कि "समुद्री क्षेत्रों के लिए कोई अन्य तथाकथित दावे नहीं थे।"

ताइवान के इस स्पष्टीकरण ने सीधे तौर पर चीन के उस दावे का खंडन किया है जिसमें कहा गया है कि चीन 9-डैश्ड लाइनों के भीतर घिरे सभी जल क्षेत्रों पर "निर्विवाद संप्रभुता" रखता है।

21 अक्टूबर, 2014 को न्यूयॉर्क टाइम्स के साथ साक्षात्कार में , राष्ट्रपति मा, जिन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से एस.जे.डी. समुद्र के कानून में विशेषज्ञता हासिल की थी, नेकहा:
“समुद्र के कानून में एक मूल सिद्धांत है , भूमि समुद्र पर हावी है। इस प्रकार भूमि के साथ समुद्री दावे शुरू होते हैं ; हालाँकि, भले ही यह तार्किक रूप से , विवादों को हल करते समय इस प्रकार हो किंतु पहले संसाधन विकास के मुद्दों को हल करना असंभव नहीं है। xxx। "

स्कारबोरो शोआल पर फिलीपिंस के दावे का कानूनी आधार क्या है?

1898 में स्पेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच पेरिस की संधि ने एक आयताकार रेखा खींची, जिसमें स्पेन ने संयुक्त राज्य को संधि रेखाओं के भीतर स्थित अपने सभी प्रदेशों को छोड़ दिया। स्कारबोरो शोआल संधि रेखाओं के बाहर है। स्कारबोरो शोआल संधि रेखाओं के बाहर स्थित है।

तथापि, दो वर्ष बाद 1900 के वांशिगटन संधि में स्पेन ने स्पष्ट किया कि इसने संयुक्त राज्य को हालांकि, दो साल बाद, वाशिंगटन की 1900 संधि में , स्पेन ने स्पष्ट किया कि उसने सभी हक और हक का दावा , जिसका पेरिस शांति संधि होने के समय हो सकता था और पेरिस संघि से परे फिलीपिन आर्किपेलेगो से संबंधित सभी द्वीपसमूहों को भी संयुक्त राज्य अमेरिका को दे दिया था। इस प्रकार , स्पेन ने 1900 की वाशिंगटन की संधि के तहत स्कारबोरो शोआल को संयुक्त राज्य अमेरिका में सौंप दिया (7 नवंबर , 1900 को फिलीपींस के बाहरी क्षेत्र स्थित द्वीप समूह के कब्जे के लिए स्पेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संधि।)।
1938 में अमेरिका ने पहले ही निर्धारित किया कि स्कारबोरो शोआल को फिलीपिन भूभाग है।

जब यह मुद्दा किस्कारबोरो शोआल फिलीपीन क्षेत्र का हिस्सा है या नहीं , तो अमेरिकी विदेश विभाग के सचिव कॉर्डेल हल ने 27 जुलाई, 1938 के अपने ज्ञापन में हैरी वुड्रिंग , युद्ध सचिव को कहा:

अन्य दावों के नहीं होने के कारण , 7 नवंबर, 1900 * की अमेरिकी-स्पेनिश संधि द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका को दिए गए द्वीपों में शोआल को शामिल माना जाना चाहिए ...।किसी अन्य सरकार द्वारा हवाई और महासागर नेविगेशन के लिए सहायता के रूप में शोआल की संभावनाओं का अध्ययन करने के लिएस्कारबोरो शोआल के लिए एक बेहतर दावे के सबूत के अभाव में राज्य विभाग राष्ट्रमंडल सरकार के प्रस्ताव पर कोई आपत्ति नहीं जताएगा।

फिलीपींस ने स्पेनिश औपनिवेशिक काल (पल्मस केस का द्वीप) के बाद से स्कारबोरो शोआल पर प्रभावी, निरंतर, खुले और सार्वजनिक संप्रभुता का प्रयोग किया।

1960 के दशक से 1980 के दशक तक , स्कारबोरो शोआल का अमेरिकी और फिलीपीन सेनाओं द्वारा अपने युद्धक विमानों के लिए एक प्रभाव रेंज के रूप में इस्तेमाल किया गया था। अमेरिकी और फिलीपीन के अधिकारियों द्वारा जब कभी भी बमबारी होती रही, संयुक्त राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन के माध्यम से दुनिया भर में नोटिस टू मैरिनर्स जारी किए गए थे। किसी भी देश ने इन सैन्य गतिविधियों के लिए कोई विरोध दर्ज नहीं किया।

चीन की मुख्य आपत्ति

“xxx यह भी माना गया कि मध्यस्थता संबंधी विषय-वस्तु काअभिसमय की व्याख्या या अनुप्रयोग से कोई लेना-देना नहीं है , इसे *2006* में अभिसमय के अनुच्छेद *298* के तहत चीन द्वारा दायर घोषणा से बाहर रखा गया है, क्योंकि यहदोनों राष्ट्रों के बीच समुद्री परिसीमन संबंधी विवाद का एक अभिन्न अंग है।‘’

चीन सही कहता है कि ऑप्ट आउट खंड (यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद 298 (1) (क) (एक)) के तहत अपने 2006 की घोषणा से उत्पन्न अपवर्जन का ‘’दो राष्ट्रों के बीच समुद्री परिसीमा का विवाद से संबंध है। ”अनुच्छेद 298(1)(क)(एक) ‘’समुद्री सीमा परिसीमन से संबंधित अनुच्छेद 15, 74 और 83 की व्याख्या अथवा अनुप्रयोग संबंधी विवाद ’’ की अनिवार्य मध्यस्थता से अपवर्जन की अनुमति देता है।

अनुच्छेद 15–विपरित अथवा नजदीकी तटों के साथ राष्ट्रों के बीच प्रादेशिक समुद्र की परिसीमा।

अनुच्छेद 74–विपरित अथवा नजदीकी तटों के साथ राष्ट्रों के बीच विशेष आर्थिक जोन का परिसीमन।

अनुच्छेद 83–विपरित अथवा नजदीकी तटों के साथ राष्ट्रों के बीच महाद्वीपीय शेल्फ का परिसीमन।

फिलीपींस और चीन के बीच कोई अतिव्यापी क्षेत्रीय समुद्र नहीं है। फिलीपींस और चीन के बीच अतिव्यापी ईईजेड नहीं है। पश्चिम फिलीपींस सागर के लूजोन पक्ष में , मनीला ट्रेंच फिलीपींस को एक विस्तारित महाद्वीपीय शेल्फ का दावा करने से रोकता है ताकि फिलीपींस के पास इस क्षेत्र में चीन के साथ कोई अतिव्यापी ईसीएस न हो।

चीन यह दावा नहीं करता है कि 9-डैश्ड लाइनों से घिरा जल क्षेत्र उसके क्षेत्रीय समुद्र , ईईजेड या सीएस हैं। 9-डैश्ड लाइनों को चीन के तट रेखाओं के साथ नहीं मापा गया है , और इसलिए 9-डैश्ड लाइनें संभवतः चीन के क्षेत्रीय समुद्र , ईईजेड या सीएस को निरूपण नहीं कर सकती हैं। चीन की 9-डैश्ड लाइनों के जल क्षेत्र और फिलीपींस की टीएस , ईईजेड या सीएस के बीच कोई अतिव्यापी टीएस, ईईजेड या सीएस नहीं है जो यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद 298 (1) (ए) के तहत ऑप्ट आउट खंड के अधीन हो। वास्तव में , चीन 9-डैश्ड लाइनों द्वारा "अद्वितीय" जल क्षेत्र के रूप में संलग्न जल क्षेत्र का दावा करता है , यह मानते हुए कि ये जल क्षेत्र न तो प्रादेशिक हैं, न ही ईज़ेड और न ही सीएस जल क्षेत्र।

यूएनसीएलओएस के अनुच्छेद 309 में कहा गया है कि "इस अभिसमय के किसी अन्य अनुच्छेद द्वारा अनुमति नहीं दिए जाने तक इस अभिसमय में कोई शर्त या अपवाद नहीं डाला जा सकता है।"

अनुच्छेद 310 में कहा गया है कि अभिसमय के हस्ताक्षर या अनुसमर्थन पर किसी राष्ट्र द्वारा की गई घोषणा या बयान "उस राष्ट्र के लिए अपने आवेदन में इस अभिसमय के प्रावधानों के कानूनी प्रभाव को संशोधित नहीं कर सकते हैं।"

यदि यूएनसीएलओएस दक्षिण चीन सागर विवाद पर लागू नहीं होता है, जैसे कि चीन की 9-डैश्ड लाइनों को तटीय राष्ट्रों के ईईजेड और साथ ही उच्च समुद्रों को घेरने की अनुमति है , तो महासागरों और समुद्रों संबंधी संविधानयूएनसीएलओएस हमारे ग्रह के बाकी महासागरों और

समुद्रों में किसी भी समुद्री विवाद के लिएभी लागू नहीं कर सकता है। यह यूएनसीएलओएस के अंत की शुरुआत होगी। नौसैनिक कैनन का नियम हमारे ग्रह के महासागरों और समुद्रों में लागू होगा,जो अब कानून का शासन नहीं रहेगा। तटीय देशों के बीच नौसैनिक हथियारों की दौड़ शुरू हो जाएगी।

ग्रोटियस ने तर्क दिया कि महासागर और समुद्र सभी मानव जाति के हैं। ग्रोटियसने नीदरलैंड की स्थिति को स्पष्ट किया। वर्षों बाद , प्रत्युत्तर में, जॉन सेल्डन ने *मेयर क्लॉसम* या क्लोज्ड सी लिखा। सेलडेन ने तर्क दिया कि महासागर और समुद्र संप्रभु राष्ट्रों द्वारा विनियोग और स्वामित्व के अधीन हैं। सेल्डन ने इंग्लैंड, स्पेन और पुर्तगाल की स्थिति को स्पष्ट किया, जो उस युग के नौसैनिक शक्तियां थीं। एक सदी से अधिक समय तक ये दो विरोधी विचार दुनिया के दिलों और दिमागों के लिए जूझते रहे। ग्रैटियस ने उस महान लड़ाई को जीता और उसका विचार आधुनिक लॉ ऑफ़ द सी की नींव बन गया।

आज, चीन ने जॉन सेल्डन के इस तर्क को पुनर्जीवित कर दिया है कि एक राष्ट्रअपने स्वयं के संप्रभु जल क्षेत्र के रूप में पूरे या लगभग पूरे समुद्र को हथिया सकता है। मूल प्रश्न यह है कि यह यूएनसीएलओएस अधिकरण के समक्ष चीन के खिलाफ फिलीपींस की मध्यस्थता मामले की सुनवाई का यह मुख्य मुद्दा है। यदि चीन के 9-डैश्ड लाइनों के दावे को माना जाता है , तो यह समुद्र संबंधी कानून के ग्रोशियन नींव पर सीधा हमला होगा। नेविगेशन की आजादी , उड़ान भरने की आजादी, ऊंचे समुद्रों में मछलियों को पकड़ने की आजादी, तटीय राष्ट्रों के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों और महाद्वीपीय शेल्व का अधिकार और मानव जाति की साझी विरासत पर आधारित सिद्धांतआदिसभी खतरे में होंगे।

ग्रोशियन प्रश्न

क्या विश्व समुदाय किसी एक देश को समुद्र के नियम को फिर से बनाने की अनुमति देगा ताकि वह कदाचित पूरे समुद्र पर अविवादित संप्रभुता कायम कर सके , इसके संपूर्ण भागों को अपने संप्रभु क्षेत्राधिकार में ले सके और अन्य तटीय राष्ट्रों के ईईजेड के बड़े भूभाग पर कब्जा कर सके जिन पर यूएनसीएलओएस के अंतर्गत उन राष्ट्रों का कानूनी समुद्री अधिकार है?

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

***